ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

धार्मिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से मीरां की साहित्य में स्त्री चेतनाः

प्रतिमा खटुमरा असिस्टेन्ट प्रोफेसर–हिन्दी स.ध.रा.महाविद्यालय ब्यावर

e.mail-pratimakhatumra@gmail.com

स्त्री समता के सारे आदर्शो और आधुनिक प्रजातांत्रिक चेतना के बावजूद आज भी भारतीय आम स्त्री शोषित और पीड़ित है। इसका मूल कारण वेद, पुराण की संहिताएं और धार्मिक ग्रंथों की उन शिक्षाओं में ढूंढा जा सकता है, जहां स्त्री को सर्वत्र अन्या की भूमिका प्रदान की गई है, साथ ही साथ आर्थिक पराधीनता भी इसका बहुत बड़ा कारण रहा है। इन धर्मग्रंथों के अनुसार कोई भी स्त्री तभी सराहनीय है, जब वह मां, बेटी, बहन, पत्नी बनकर किसी ना किसी रूप में पुरुष के अधीन हो। स्त्रियों को भी इस तरह शिक्षा-दीक्षा दी जाती है कि वे पुरुष को ही अपना रक्षक मानती है। किसी ना किसी रूप में पुरुष ही हमारा रक्षक है, यह धारणा स्त्रियों के जातीय सामूहिक अवचेतना में इतनी अधिक रची-बसी है कि स्त्रियां इससे भिन्न सोच ही नहीं पाती। स्त्रियां अधीनता और शोषण को ही अपनी नियती मान लें, इसके लिए पुरुषों ने समय-समय पर तरह-तरह के तरीकों को अपनाया है।

मीरां ने अपने पारिवारिक व सामाजिक जीवन में ही चेतना के स्वर मुखरित नहीं किये थे धर्म के क्षेत्र मैं भी उन्होंने अपूर्व साहस का परिचय दिया था। मीरां ने राजमहलों से बाहर निकलकर रैदास को अपना गुरु बनाया था तथा ऊंच नीच, जातिभेद को अमान्य कर पददलित पीड़ित वर्ग को अपने सत्संग मंडल में स्थान दिया था, तथा उनके लिए मेवाड़ के राजमहल में स्थित मंदिर के प्रवेश द्वार खोले थे। यह एक युगांतकारी क्रांतिकारी कदम से कम नहीं कहा जा सकता। मीरां ने बाह्य आचार और सामाजिक स्तर भेदों को नकार दिया था। सांमतवादी रूढियों को तोड़ने के लिए गिरधर भक्ति का संकल्प लेकर रनिवास से बाहर से जुडने की जोखिम उठाना तथा सामाजिक प्रतिष्ठा खोने का कार्य करने में भी पीछे नहीं हटी। सगुणोपासकों की परंपरा में पूजा-अर्चना की विशेष पद्धति, वर्णाश्रम धर्म की स्वीकृति, छूआछूत आदि पर विशेष बल दिया था। कृष्ण के सगुण रूप उनके सौन्दर्य की अनन्य उपासिका होते हुए भी मीरां ने वर्णाश्रम, छूआछूत आदि से उत्पन्न अमानवीय भेदभाव के बंधन से अपनी आत्मा व हृदय को मुक्त रखा। हर जाति, वर्ण, वर्ग के हरि भक्तों, संतों महात्माओं, साधु, योगियों का स्वागत सत्कार करना, उन्हें सम्मान देना, उनके भक्ति विषयक विचारों को जानना मीरां को बहुत भाता था। मीरां ने ऊँच-नीच के भेदभाव को नहीं माना, सभी की समभाव से सेवा की। मीरां के युग में धर्म के वेश में यह बहुत बडा क्रांतिकारी उदाहरण था कि उच्च कुलोत्पन्न मीरां ने जाति, वर्ग, ऊँच-नीच के भेदभाव का परित्याग कर भक्ति के क्षेत्र में विद्यमान हर व्यक्ति को आदर सम्मान दिया। मीरां के कुछ पदों में 'रैदास' के प्रति जो श्रद्धा व्यक्त हुई है वह यह सिद्ध करती है कि मीरां ने जाति, वर्णाश्रम भेद को भूल कर मानव धर्म का पालन किया। जिस भी व्यक्ति में मीरां को महानता, उदात्तता, श्रेष्टता के दर्शन हुए मीरां उसके सम्मुख नतमस्तक हुई।

मीरां के ससुराल पक्ष में कुलदेवी की पूजा की परंपरा थी। मीरां से भी यह अपेक्षा की गई की वह भी कुलदेवी की पूजा करे। मीरां ने देवी की पूजा करने से स्पष्ट इंकार कर दिया था। उनके एक मात्र आराध्य श्रीकृष्ण थे, अन्य किसी भी देवी देवता के सन्मुख उन्हें मस्तक झुकाना स्वीकार नही था। मीरां की यह दृढ़ता और भक्ति देव में उनके विचारों का धार्मिक खुलापन ऊँच-नीच के भेदभाव के परित्याग की प्रवृत्ति भी दूसरों को प्रेरित करने में सक्षम थी। नारी संबंधी परस्पर विरोधी अवधारणाओं के सृजन में हमारे शास्त्रों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। क्योंकि मनु-स्मृति और अन्य धर्मग्रंथों का भारतीय समाज और संस्कृति को ढ़ालने में महत्वपूर्ण हाथ रहा है। आज भी स्त्री को अपने वश में रखने के लिए, उसके शोषण और दमन की परंपरा को बरकरार रखने के लिए मनुस्मृति की पंक्तियां और रामचरितमानस के दोहे सुनाए जाते है-

न वै स्त्रैणानि सख्यानि

स्ति सालावृकाणां हृदयान्येता। [1]

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

लेकिन इस धर्म व्यवस्था को मीरां ने नहीं माना। वह किसी पर आश्रित नहीं रही और उसने अपनी राह खुद चुनी। मीरां ने अपने पारिवारिक व सामाजिक जीवन में ही चेतना के स्वर मुखरित नहीं किये थे। धार्मिक क्षेत्र में भी उनकी स्त्री चेतना एक साहसिक पहल थी। उनकी प्रणय विभोर आत्मा सांसारिक मर्यादाओं को तृच्छ, लोक-निन्दा को उपेक्षणीय एवं पारिवारिक बंधनों को समझती हुई मदविह्वल गति से अलौकिक प्रियतम की ओर अग्रसर होती गई। अतः वह अपनी आकांक्षाओं की अभिव्यक्ति में किसी प्रकार के लज्जा-संकोच या अस्पष्ट प्रतीकों का प्रयोग नहीं करती। उनकी भक्ति-भावना सच्ची थी। जिसकी अभिव्यक्ति के लिए उन्हें किसी प्रकार की कृत्रिमता एवं बाह्य आवरण की अपेक्षा नहीं हुई। हिन्दू धर्म में विवाह धार्मिक संस्कार के रूप में जाना जाता है। जिसमें 'पति' को पत्नी के लिए परमेश्वर का स्थान दिया गया है। पति कैसा भी हो,किसी रूप में हो, स्त्री उसकी पूजा करती है-

"एकइ धर्म एक व्रत नेमा।

काय बचन मन पति पद प्रेमा।।

मन बच कर्म पतिहि सेवकाई।

तियही न यहि सम आन उपाई।।" [2]

अर्थात स्त्री के लिए पतिव्रत धर्म के समान कुछ नहीं है। इसलिए मनसा-वाचा-कर्मणा भाव से पति की सेवा करनी चाहिए। मीरां के परिवार ने अपनी इच्छा से मीरां के भौतिक शरीर का विवाह अवश्य करवा दिया था किन्तु निर्भीक व दृढ़ निश्चयी मीरां ने विवाहोपरान्त भी अपने हृदय की वास्तविक पुकार को दबने नहीं दिया। उसने धर्म की इस मान्यता को दरकिनार कर श्री कृष्ण को ही अपना पति माना और उनकी आराधना की-

"मैं गिरधर के घर जाऊं

गिरधर म्हारों सांचों प्रीतम , देखत रूप लुभाऊँ

रैण पड़े तब ही उठि जाऊँ, भोर गये उठि जाऊँ

रैण दिना बाके संग खेलूँ, ज्यूँ त्यूँ वाहि लुभाऊँ

जो पहिरावै सोई पहिरू जो दे सोई खाऊँ

मेरी उणकी प्रीत पुराणी, उण विण पल न रहाऊँ

जहं बैठावै तितही बैठूँ बेचे तो बिक जाऊँ

मीरां के प्रभु गिरधर नागर, बार बार बलि जाऊँ।।" [3]

हिन्दू स्त्री पति से अलग रहकर कोई व्रत-यज्ञ या उपवास नहीं कर सकती है, क्योंकि पति की सेवा करने से ही स्वर्ग में आदर पाती है-

"नास्ति स्त्रीणां पृथग्यज्ञो न व्रत नाप्युपोषणम।

पति शुश्रुषते येन तेन स्वर्गे महीयते।।" [4]

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

मनुस्मृति में भी कहा गया है कि विवाह के बाद स्त्री के लिए पति परायणता ही मुख्य धर्म है,इसके सिवा सब धर्म गौण है। जो स्त्री पति की आज्ञा बिना व्रत, उपवास आदि करती है,वह अपने पति की आयु को हरती है और स्वयं नरक में जाती है-

"पत्यौ जीवति या तु स्त्री उपवासं व्रतं चरेत।

आयुष्यं हरते भर्तुर्नरकं चैव गच्छिति।।" [5]

किन्तु मीरां ने इन धार्मिक प्रपंचों को कभी नहीं अपनाया। उन्होंने कभी कोई व्रत उपवास नहीं किया। फिर भी उनका सुहाग अमर था इसलिए वह कहती है-

"बारियाँ साजन सावंरो, म्हारो चुड़लो अमर हो जाये।" [6]

हिन्दू संस्कृति में विवाहित स्त्रियां साज श्रृंगार अपने पति को दिखाने और रिझाने के लिए करती है लेकिन मीरां ने कभी भी श्रृंगार दूसरो को दिखाने के लिए नहीं किया। वह जो भी करती थी स्वयं अपने लिए ही करती थी।

हिन्दू समाज में पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। भारतीय समाज में पर्दा प्रथा का अभ्युदय मुस्लिम शासको के आगमन से ही हुआ। धीरे-धीरे हिन्दू राजघरानों में भी पर्दा प्रथा को अपना लिया गया। मीरां चूंकि राजपूत स्त्री थी अतः उससे भी यह अपेक्षा की गई कि वह भी पुरुषों से परदा करे लेकिन मीरां ने परदा करने से मना करते हुए साफ शब्दों में कहा-

"घूंघट म्हे ताजियों राणाजी।

घूंघट काढू तो दुनिया लाजै, लाजै म्हारां कानाजी।

म्हारों घूंघट सांवरियों है अर साधो रो ज्ञान।

उण घूंघट में प्रीतम नरखू जिस दिन उठारों ध्यान।" [7]

मीरां ने अपनी दृढता, आत्मविश्वास एवं विद्धता के बल पर यह सिद्ध कर दिया कि भक्ति पथ पर पुरुषों का एकाधिकार नही है। भगवद भक्ति की स्वतंत्रता व अधिकार स्त्रियों को भी उतनी ही है, जितनी पुरुषों को। मीरां ने अपना भक्ति पथ बिना किसी गुरू का संप्रदाय की सहायता के स्वयं ही चुना और सिद्ध कर दिया कि स्त्रियां अपने बल पर बहुत कुछ कर सकती है। मीरां ने निरंतर पुरुष समाज की चुनौतियों का दृढता से सामना किया। धर्म के क्षेत्र में पुरुषों के विद्धता, तर्क व पांडित्य के मिथ्याभिमान को भी मीरां ने धूल में मिला दिया। उनके भक्ति पथ पर अड़चन डाली गयी किंतु विचलित नहीं हुई। अड़चनों से संघर्ष कर मीरा और अधिक दृढ़ संकल्प हाती गयी। मीरां ने किसी पथ प्रदर्शक की आवश्यकता अनुभव नही की, कर्मकाण्डों से सदा परे रही, किसी संप्रदाय में दीक्षा नहीं ली और सभी भक्तों, विद्वानों, साधु-संतों से समान व्यवहार किया। इस प्रकार मीरां ने धर्म के क्षेत्र में प्रचलित सड़ी-गली मान्यताओं के विरूद्ध पग उठाने का साहस किया, स्त्री के लिये अधिकार जीतने की दिशा में संघर्ष किया और पुरूषों के प्रभुत्व-स्वामित्व के क्षेत्र से बाहर निकल अपने बल पर अपना मार्ग प्रशस्त करने की प्रेरणा दी।

ऐसी ही अभिव्यक्तियों को 'सीमंतनी उपदेश' की भूमिका में डॉ. धर्मवीर ने हिन्दु विधवा के पुनर्विवाह की मांग कहा है। परंतु मीरां कहीं भी शास्त्र सम्मत पुनर्विवाह की बात नहीं करती है। ये तो स्वयं सिद्ध संसार में गिरधर की पत्नी के संबंध में है या प्रेम के निर्द्वद्व, निभ्रांत, निष्कलुष संसार की कामना करती है। वे पत्नी की भूमिका में भी असमानतापूर्ण कर्त्तव्यों में जकड़ी पत्नी नहीं है। वे साहसी पत्नी है, समानता के अधिकार भाव से सम्पन्न पत्नी है, जो प्रेम के लिए स्वयं पहल करती है। यह साहस आसान नहीं है। [8]

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

हिंदी साहित्य संसार में मीरां स्त्री-मुक्ति कामनाओं का पहला मुखर स्वर है। चूँकि प्रेम स्वभाव से ही विद्रोही होता है, वह सत्ता, व्यवस्था का प्रतिपक्ष रचता है। मीरां भी प्रेम के माध्यम से सत्ता व्यवस्था का प्रतिपक्ष रचती दिखती है। उनकी स्वतंत्रता की आंकाक्षा आध्यात्मिक से अधिक सामाजिक व्यवस्था के भीतर स्त्री स्वतंत्रता की आकांक्षा और आध्यात्म इस आंकाक्षा में एक ओट की तरह प्रस्तुत किया गया लगता है, वह भी तिनके की ओट जिसमें कुछ छिपता नहीं, वरन् स्त्री मुक्ति आकांक्षाओं का मानवीय संसार उद्भाषित होता रहता है।

स्त्रियां इस समाज में भले ही वे किसी वर्ण,कुल या परिवार की क्यों न हो, वस्तुतः सबसे निम्न स्तर पर थी। पुरूष सत्ता के सम्मुख उसकी हैसियत धार्मिक नियमों, सामाजिक परंपराओं और नागरिक के रूप में किए गए कर्त्तव्यों पर आधारित थी। इन कर्त्तव्यो, प्रतिबंधों का पालन करके वह अपने जीवन को बाधारहित और सुविधाजनक बना सकती थी। पुरूष)पति,पिता,पुत्र(उसके रक्षक थे। वशिष्ठ धर्मसूत्र में लिखा गया है-

''पिता रक्षति कौमारे, भ्राता रक्षति यौवने।

स्थविरे पुत्रा न स्त्री स्वतंत्रमहर्ति।'' [9]

वेदों से लेकर ऐतरेय ब्राह्मण, रामायण, महाभारत, मनुस्मृति, तैतरिय संहिता, यम संहिता-वशिष्ठ धर्मसूत्र, आपस्तम्ब धर्मसूत्र तक सभी धर्मग्रंथों का एक ही निष्कर्ष था-स्त्री पुरूष की भोग सामग्री, उसके बच्चों की मां और घर की कैद में दिन-रात जुती रहने वाली मजदूरनी के रूप में ही स्वीकार्य है। उसका अपना कोई निजी अस्तित्व नहीं है। न उसे शिक्षा की आवश्यकता है, न संपत्ति की। स्त्री के लिए विवाह ही है उपनयन, पतिगृह में वास करना ही गुरूगृह में बास करना और पति सेवा है वेदाध्ययन। उसका परमेश्वर पति है पति के चरणों में ही स्वर्ग है। पति)पुरूष सत्ता(के आदेशों को न मानने वाली स्त्री नरक की अधिकारिणी है। पति के अतिरिक्त किसी और का ध्यान उसके नीच होने का सबूत है। कुल मिलाकर स्वतंत्रता पर स्त्री का कोई अधिकार नहीं। किंतु मीरां ने इन धार्मिक एवं सांस्कृतिक रीति रिवाजों के विरूद्ध जाकर अलौकिक कृष्ण को अपना पति माना।

मीरा राणा के संघर्ष में 'धार्मिक उक्तियों' पर विचार किया जाए तो हमें पता चलता है कि मीरां ने धर्मशास्त्रों आदि का अपने पक्ष में उपयोग कभी नहीं किया है अर्थ यह है कि 'राणा' द्वारा किए गए कृत्यों को कोई धार्मिक या शास्त्रीय आधार दिए जाने की, उसे वैद्यता प्रदान करने के लिए धार्मिक समर्थन की कोई आवश्यकता नहीं समझी गई। यह सर्वशक्तिमान सत्ता की तरह था, जिसके कृत्यों/कुकृत्यों को इस तरह की धार्मिक-सामाजिक स्वीकृति/सहमति प्राप्त करने की आवश्यकता न थी। आशय यह है कि उसके खिलाफ लड़ने वाली कोई सामाजिक सत्ता या समूह नहीं था। यहां तक मीरां के प्रश्न पर उसका परिवार जो 'वैष्णवी' भी था और 'राज परिवार' भी 'राणा' के सम्मुख खड़ा नहीं हुआ।

मध्ययुगीन समाज ने अपने धर्म का प्रयोग कर मीरां के भौतिक शरीर को अवश्य उसके लौकिक पति की संगिनी बना दिया, किंतु मीरां का हृदय, उसकी आत्मा सदा उसके 'अविनासी' प्रियतम की ही धरोहर रही। मीरां की सच्ची प्रीति तो अपने अविनाशी प्रियतम के प्रति ही है।

''अविनाशी सूँ बालकां है जिनसूं सांची प्रीत।'' [10]

मीरां ने अपने आराध्य को अपना प्रियतम माना था और प्रियतम के समक्ष समाज, परिवार, कुल की मर्यादा, प्रतिष्ठा, नियमों, परम्पराओं के बंधन का उसके लिए कोई महत्त्व नहीं रखता था। प्रत्येक हिंदु स्त्री की ही भांति मीरां के प्रेम का भी सर्वाधिक आलोकमय धरातल समर्पण भाव का धरातल है। मीरां तो अपने गिरधर के लिए 'बिक जाने को' भी तत्पर है। ऐसे अद्भुत समर्पण भाव की लालसा के सम्मुख समाज की धार्मिक नियमावली का अंकुश व्यर्थ है।

Copyright @ 2023 Author

ISSN: 2278-4632
Vol-13, Issue-05, No.04, May : 2023

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.कल्याण, नारी अंक, पृ.सं. 90

2. गोस्वामी तुलसीदास, रामचरितमानस,गीता प्रेस, गोरखपुर 1994

3. मनुस्मृति, 5/155

4. मनुस्मृति, 5/155

5.परशुराम चतुर्वेदी, मीरांबाई की पदावली, पृ.सं. 100

6. वही पृ.सं. 154

7.पदमावती, मीराँ व्यक्तित्व और कृतित्व, हिन्दी प्रचारक संस्थान वाराणसी, प्रथम संस्करण 1973 पृ.सं.207

8.सं. धर्मवीर वर्मा,हिन्दी साहित्य कोष, ज्ञानमण्ड़ल लिमिटेड़ वाराणसी, 1955

पृ. सं. 350

9.मनुस्मृति, अनुशानवर्ष, 46,13

10. परशुराम चतुर्वेदी, मीरांबाई की पदावली, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग 2008, पृ.सं. 108

Copyright @ 2023 Author